शेर और खरगोश

अमर गोस्वामी

शेर गुस्से में था।

उसने ज़ोर से दहाड़ मारी, "हाँSSSऊSS।"

उसे देखकर खरगोश को हँसी आ गई।

वह शेर के सामने ही हँस पड़ा। उस वक्त वह शेर से ज़रा-भी नहीं डरा।

खरगोश हँसते-हँसते वहाँ से खिसक गया।

शेर को खरगोश के व्यवहार पर बड़ी हैरानी हुई।

अगले दिन शेर जब हरी घास पर धूप सेंक रहा था तो उसने खरगोश को आते देखा।

उसे देखकर शेर की भौंहें सिकुड़ गईं।

उसने खरगोश से पूछा, "क्या बात है? क्यों आए हो?"

खरगोश ने कहा, "महाराज मुझे माफ करें। कल मैं आपके सामने हँस पड़ा था। तब से डर के मारे मुझे नींद नहीं आई।"

शेर ने कहा, "कल तो तुम मुझसे ज़रा भी नहीं डरे थे।"

खरगोश बोला, "जी महराज, आपसे तो नहीं डरा था मगर आपकी ताकत की बात सोचकर अब मैं डर रहा हूँ। आपके हमले से मुझे बचाने वाला इस जंगल में कोई नहीं है। मेरी गलती के लिए आप मुझे माफ कर दें।" खरगोश की रोनी सूरत देखकर इस बार शेर को हँसी आ गई।

खरगोश बेहोश हो गया।

चित्र : दिलीप चिंचालकर